मदर टेरेसा

गरीबों की सेवक

कैरोल, हिंदी : विदूषक

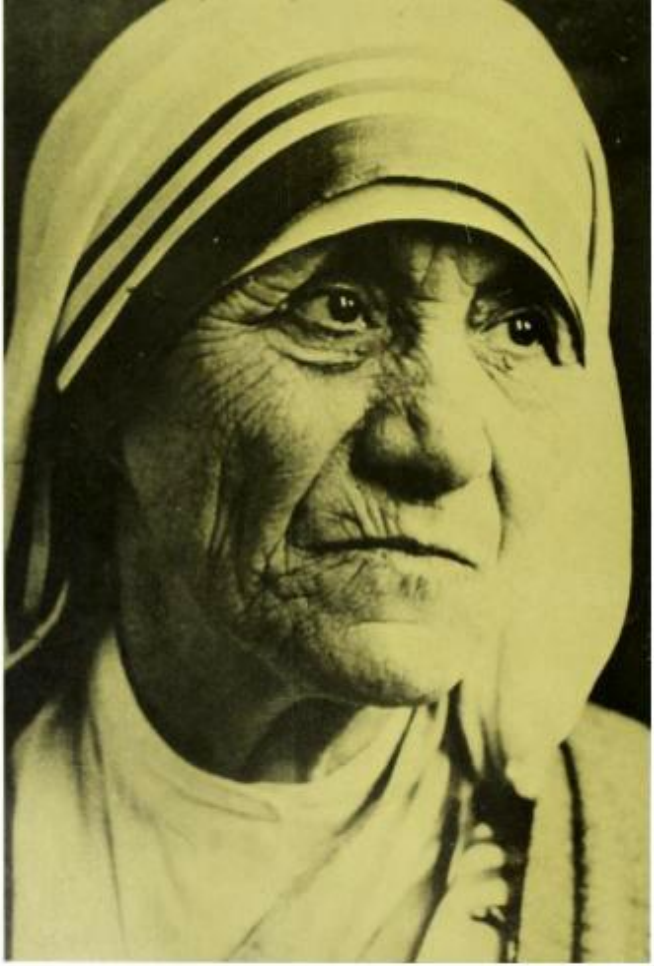

गरीबों की सेवा करने के लिए मदर टैरेसा को 1979 में नोबल पुरुस्कार मिला.

मदर टेरेसा

गरीबों की सेवक

कैरोल, हिंदी : विदूषक

Austria
Hungary
Romania
यूगोस्लाविया
Yugoslavia
Adriatic Sea
शोहपयी
Bulgaria
Skopje
Italy
Albania
Greece

अपनी सड़क पर

एगनीज़ एक साधारण सी छोटी लड़की थी. उसे अपने परिवार से प्यार था. उसे संगीत से भी प्रेम था. उसे पहाड़ों की सैर करना बहुत अच्छा लगता था.

एगनीज़ के जन्म 27 अगस्त 1910 को हुआ. उसका पूरा नाम था - एगनीज़ गोंक्सहा बोजाजिउ. उसका एक बड़ा भाई और बहन भी थे. उसका परिवार मूल रूप से अल्बानिया का था. पर अब वे शोद्रपयी, यूगोस्लाविया में रहते थे.

एगनीज़ शोद्रपयी के ही एक पब्लिक स्कूल में पढ़ी. वो रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा संचालित स्कूल में गई. वो एक खुशमिजाज़, साधारण, छोटी सी लड़की थी.

मदर टेरेसा जब वो युवा थीं.

जब एगनीज़ बारह साल की हुई तब कुछ ख़ास हुआ. उससे एगनीज़ की पूरी ज़िन्दगी बदल गई. अब वो साधारण नहीं रह सकती थी.

एगनीज़ की भेंट एक पादरी से हुई जो भारत में काम करते थे.

उस पादरी ने एगनीज़ को भारत के बारे में बताया. उसने एगनीज़ को अपने मिशनरी काम के बारे में भी बताया. पादरी ने कहा कि हरेक को अपने दिल की आवाज़ सुनकर ही अपना रास्ता चुनना चाहिए.

"मैं भी क्यों न अपना रास्ता ढूँढूं!" एगनीज़ ने सोचा. "मुझे पता नहीं कि मेरी राह क्या होगी. क्या मैं भी एक दिन मिशनरी बनूँगी?"

एगनीज़ ने पादरी से लम्बी चर्चा की. पादरी ने कहा, "तुम इंतज़ार करो. सही वक्त पर भगवान ही बताएँगे कि तुम्हें क्या करना है."

एगनीज़ ने छह साल इंतज़ार किया. वो पादरी दुबारा फिर अपने देश वापिस आए.

"मुझे क्या करना है, अब यह मुझे पता है," एगनीज़ ने उससे कहा. "मैं भी मिशनरी बनूंगी – शायद भारत में."

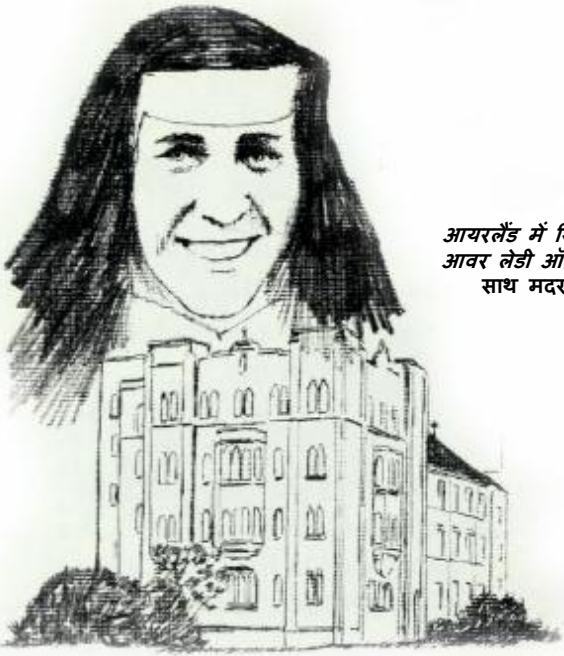

आयरलैंड में सिस्टर्स ऑफ़ आवर लेडी ऑफ़ लोरेटो के साथ मदर टेरेसा.

पादरी ने उसे आयरलैंड के एक धार्मिक समुदाय के बारे में बताया – *सिस्टर्स ऑफ़ आवर लेडी ऑफ़ लोरेटो.* यह संस्था भारत में भी मिशनरी काम करती थी.

उसके बाद एगनीज़ अपना घर छोड़कर आयरलैंड गई. वहां पर उसने अन्य नन्स के साथ साल भर पढ़ाई की. उसके बाद उन्हें भारत में उनके नए घर भेजा गया.

महिलायें नन बनने के बाद अक्सर अपना नाम बदल लेती हैं. वे जिस संत को पसंद करती हैं वो उसका ही नाम रख लेती हैं. एगनीज़ ने भी अपना नाम बदलकर *टेरेसा* रखा.

शुरु में सिस्टर टेरेसा ने कलकत्ते के एक हाई-स्कूल में पढ़ाया. उसे पढ़ाना बहुत पसंद था और उसमें उसने बहुत अच्छा काम भी किया. कुछ ही सालों में वो उस स्कूल की प्रिंसिपल बन गईं.

भारत में मदर टेरेसा. वो एक अनाथ बच्चे को पकड़े हुए हैं.
मदर टेरेसा को अक्सर "झुग्गी-झोपड़ियों का संत" बुलाया जाता था.

एक रात भारत में सिस्टर टेरेसा ट्रेन में सफ़र कर रही थीं. तभी उन्हें कुछ तस्वीरें दिखाई देने लगीं. उन्हें वे चित्र अपनी आँखों से दिखाई नहीं दिए. वो अपने आसपास की चीज़ें और लोगों को नहीं देख रही थीं. सिस्टर टेरेसा अपने दिल और दिमाग से कलकत्ते में रहने वाले गरीब लोगों को देख रही थीं.

उन गरीब लोगों की स्थिति बहुत दयनीय थी. उनमें से बहुत से बीमार थे. उनके पास न पैसे थे, न घर, और न ही भोजन. सबसे खराब बात थी कि उनसे कोई प्रेम करने वाला नहीं था.

“यह भगवान के लोग हैं. इन्हें मेरी सेवा की ज़रुरत है,” सिस्टर टेरेसा ने खुद से कहा.

1948 में सिस्टर टेरेसा ने कलकत्ते की बाकी नन्स को छोड़ दिया. वो एक दूसरे शहर में गईं और वहां उन्हें स्वास्थ्य सेवा के बारे के सीखा. उन्हें पता था कि गरीबों की मदद करने के लिए उन्हें नई कुशलताओं की ज़रुरत पड़ेगी.

फिर क्रिसमस के समय सिस्टर टेरेसा कलकत्ते वापिस आईं. अब वहां उनका कोई घर नहीं था. उनके पास पैसे भी नहीं थे. वो बिल्कुल अकेली थीं. पर उन्हें क्या करना है यह उन्हें पता था.

सिस्टर टेरेसा एक बीमार बच्चे को सांत्वना देते हुए.

सिस्टर टेरेसा को ऐसे पांच बच्चे मिले जो सड़कों पर रहते थे. कोई भी उन बच्चों को नहीं चाहता था. फिर सिस्टर टेरेसा उन बच्चों को पार्क में ले गईं और वो उन्हें पढ़ना सिखाने लगीं.

क्रिसमस वाले दिन तक सिस्टर टेरेसा के पास ऐसे पच्चीस बच्चे हो गए थे. नए साल वाले दिन इन बच्चों की संख्या 41 हो गई थी. अब सिस्टर टेरेसा अकेली नहीं थीं. उन बच्चों की देखभाल करने वाला, उन्हें प्यार करने वाला भी कोई तो था.

सिस्टर टेरेसा भी उन गरीब लोगों जैसी ही रहती थीं. अब गरीब लोग, सिस्टर टेरेसा को अपने करीब महसूस करते, और सिस्टर टेरेसा उन्हें. वो अब एक छोटे कमरे में रहती थीं. एक भारतीय आदमी ने उन्हें वो कमरा दिया था.

सिस्टर टेरेसा को लगा कि बाकी लोग शायद उस हालत में रहना नहीं चाहें. पर उनका सोच गलत निकला. एक दिन एक युवा भारतीय महिला सिस्टर टेरेसा से मिलने आई. सिस्टर टेरेसा ने उसे हाई-स्कूल में पढ़ाया था.

“मैं आपके साथ काम करना चाहती हूँ,” उस युवा महिला ने कहा.

जल्द ही नौ और युवा महिलाओं ने भी वैसा ही किया. वे सभी कभी सिस्टर टेरेसा की पूर्व छात्र रही थीं. अब वे महिलाएं नई नन्स थीं और सिस्टर टेरेसा अब मदर टेरेसा बन गई थीं.

मिशनरी ऑफ़ चैरिटी की नन्स हमेशा नीली किनार वाली सफ़ेद साड़ी पहनती थीं.

मदर टेरेसा ने अपनी नन्स को *मिशनरीज ऑफ़ चैरिटी* बुलाया. उनमें से हरेक ने गरीबों से प्रेम करने और उनकी सेवा करने का प्रण लिया. हरेक नन एक सादा साड़ी पहनती थी. यह साड़ी बिल्कुल सस्ती थीं और उन्हें गरीब भारतीय महिलाएं भी पहनती थीं. पर जिन लोगों की यह नन्स सेवा करती थीं उन्हें यह साड़ियाँ बेहद सुन्दर लगती थीं.

झुग्गी-झोपड़ियों में परियां

एक दिन मदर टेरेसा कलकत्ते की एक झोपड़-पट्टी में घूम रही थीं. तभी उन्हें एक कचरे के ढेर में एक महिला पड़ी हुई दिखी. वो महिला मर रही थी. उसकी हालत बहुत खराब थी.

मदर टेरेसा ने उस महिला को उठाया. वो उसे अस्पताल ले गईं. क्योंकि वो मरने की हालत थी इसलिए अस्पताल वालों ने उसे दाखिल नहीं किया. पर मदर टेरेसा ने कहा कि जब तक वो उस बीमार महिला को दाखिल नहीं करेंगे तब तक वो वहां से नहीं जाएँगी. अंत में मदर टेरेसा की जीत हुई.

इस घटना के बाद शहर के अफसरों ने मदर टेरेसा को एक इमारत दे दी, जिसे वो बहुत सख्त बीमार मरीजों के लिए उपयोग कर सकती थीं. मदर टेरेसा ने उसका नाम रखा *"निर्मल हृदय".* उसका मतलब है नेक-दिल

आज मदर टेरेसा का मिशनरी काम पूरी दुनिया में चालू है. इस चित्र में मदर टेरेसा, पूर्वी बेरूत, लेबनान में एक भूखे बच्चे को खाना खिला रही हैं.

"निर्मल हृदय" में मदर टेरेसा और उनकी नन्स लोगों की सेवा करती थीं. उनमें से कई लोग सख्त बीमार थे और उनके ठीक होनी की कोई उम्मीद नहीं थी. कई लोग बाद में मर भी जाते थे. पर वे एक साफ़-सुथरी जगह पर अपने प्राण त्यागते थे. मरते समय उनके आसपास उनसे प्रेम करने वाले लोग होते थे. कुछ उनमें से ठीक भी हो जाते थे.

फिर बहुत से लोग मदर टेरेसा को उनके परोपकारी काम के लिए धन देने लगे. भारत सरकार ने भी मदर टेरेसा की काफी मदद की.

मदर टेरेसा उन पैसों से गरीबों के लिए ज़रूरी चीज़ें खरीदती थीं. मदर टेरेसा ने कई स्कूल और अस्पताल शुरू किए. उन्होंने कई भोजनालय खोले जहाँ भूखे गरीब लोग खाना खा सकते थे. उन्होंने कई दवाखाने शुरु किए जहाँ गरीब लोगों को निशुल्क दवा मिल सकती थीं. उन्होंने बेघर बच्चों के लिए अनाथालय खोले. बाद में उन्होंने उनमें से कई बच्चों को गोद लेने के लिए अच्छे परिवार भी खोजे.

1964 में पोप पॉल VI भारत की यात्रा पर आए. कुछ अमरीकियों ने उन्हें भारत में इस्तेमाल करने के लिए एक नई और महंगी मोटरकार भेंट की. भारत छोड़ने से पहले पोप वो गाड़ी मदर टेरेसा को भेंट कर गए.

मदर टेरेसा ने उस महंगी गाड़ी में कभी सवारी नहीं की. उन्होंने वो गाड़ी बेंच दी. उन पैसों से उन्होंने कोढ़ के रोगियों के लिए एक गाँव बसाया.

पोप पॉल ने मदर टेरेसा को मैडोना की एक मूर्ती भेंट की. उन्होंने मदर टेरेसा को पोप जॉन XXIII शांति पुरस्कार से भी नवाज़ा.

कोढ़ एक रोग है जो शरीर के त्वचा और तंतुओं (नर्व) पर आक्रमण करता है. अगर कोढ़ का जल्दी इलाज नहीं हो तो उससे शरीर में गांठें बन जाती हैं और चेहरे, हाथ और पैरों की संवेदना ख़त्म हो जाती है. उससे शरीर के अंग विकृत हो जाते हैं. दुनिया में दस लाख से ज्यादा लोग कोढ़ के रोग से पीड़ित हैं. उनमें से ज़्यादातर लोग गर्म देशों में रहते हैं.

मदर टेरेसा का स्वागत करते
प्रेसिडेंट रीगन और उनकी पत्नी
(बाएं) और पोप जॉन पॉल III (ऊपर).

समय गुजरने के साथ बहुत से आदमी और महिलाएं मदर टेरेसा के साथ काम करने आए. कुछ ही वर्षों में *मिशनरीज ऑफ़ चैरिटी* का काम भारत के कोने-कोने में फैला.

उनमें से कुछ लोग इटली, इंग्लैंड, तंज़ानिया, एल साल्वाडोर और अमरीका सेवा करने चले गए. वे जहाँ भी गए उन्हें वहां सेवा के लिए बहुत से गरीब लोग मिले.

मदर टेरेसा (बाएं) और उनके कार्यकर्ता, कलकत्ता स्थित मुख्यालय में घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करते हुए. मदर टेरेसा की सिस्टर्स सबसे गरीब लोगों के साथ भारत समेत 30 अन्य देशों में काम करती हैं.

मदर टेरेसा और उनके कार्यकर्ता व्यस्त रहते हैं. वो सुबह जल्दी उठते हैं. नहाने-धोने के बाद वे चर्च में प्रार्थना करते हैं. फिर वे अपने काम पर निकलते हैं.

कुछ स्कूलों में काम करते हैं, कुछ किचन में, कुछ उन जगहों पर काम करते हैं जहाँ गरीब लोग आते हैं. कुछ बीमार मरीजों के घरों पर जाते हैं. कुछ उन लोगों के घरों में जाते हैं जहाँ बूढ़े लोग रहते हैं और जिनकी कोई परवाह नहीं करता है.

मदर टेरेसा कहती हैं,
"एक-दूसरे से उसी प्रकार प्रेम करो जैसे भगवान तुमसे प्यार करते हैं."

मदर टेरेसा मानती हैं कि गरीब लोगों को भौतिक चीज़ों से ज्यादा भी कुछ चाहिए होता है. गरीबों की सबसे बड़ी ज़रुरत होती है कोई ऐसा इंसान की जो उन्हें प्यार करे.

इंग्लैंड के प्रिंस चार्ल्स (बाएं) मदर टेरेसा के एक अनाथालय में.

"हम क्या करते हैं उससे इतना फर्क नहीं पड़ता है," मदर टेरेसा कहती हैं, "पर जो कुछ हम करते हैं उसे कितने प्रेम से करते हैं वो ज्यादा महत्वपूर्ण है."

इसलिए मदर टेरेसा और उनके कार्यकर्ता लोगों के पास प्रेम से खाना और लेकर दवाएं जाते हैं. झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले गरीब लोगों के लिए वे परियों के सामान होते हैं.

प्रोफेसर जॉन संनेस (ऊपर) मदर टेरेसा को ओस्लो, नॉर्वे में हुए समारोह में शांति के लिए नोबल पुरस्कार प्रदान करते हुए.

स्वीडन के किंग ओलाव V (ऊपर) मदर टेरेसा को बधाई देते हुए. जब मदर टेरेसा अर्थशास्त्री जॉन केनेथ गल्ब्रिअथ से मिलीं तो सभी लोग मुस्कराए (दाएं). गल्ब्रिअथ छह फीट से ज्यादा ऊंचे थे. पर मदर टेरेसा ने यह दिखा दिया कि दुनिया बदलने के लिए ऊंचे होना ज़रूरी नहीं था.

समुद्र में एक बूँद

दुनिया भर में लोग मदर टेरेसा के काम का आदर करते हैं. उन्हें अपने परोपकारी काम के लिए कई पुरस्कार मिले हैं – भारत, इंग्लैंड, इटली और अमरीका में. संयुक्त राष्ट्र संघ ने मदर टेरेसा के ऊपर मेडल बनाए हैं. 1979 में मदर टेरेसा को शांति का नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया.

नोबल पुरस्कार के धन से मदर टेरेसा ने अनेकों गरीबों की मदद की. उन्होंने यह भी कहा कि अब से उनके लिए सम्मान समारोहों में जाना संभव नहीं होगा. क्योंकि समारोहों में बहुत समय व्यर्थ होता है और उनके काम में विघ्न पड़ता है.

मदर टेरेसा गरीबों की मदद के लिए पूरी दुनिया में घूमती हैं. उन्हें लगता है कि गरीबों को भोजन, दवाओं के साथ-साथ प्रेम की भी बहुत ज़रुरत होती है.

मदर टेरेसा को अनेकों दुखदाई चीज़ें देखने को मिलीं. पर वो अपने काम से कभी दुखी नहीं होती हैं. उनका विश्वास है कि जिन गरीब लोगों की वो सेवा करती हैं – उन सभी में भगवान वास करते हैं. इसका लोगों के धर्म से कोई लेना-देना नहीं है. उन्हें लगता है कि गरीबों की सेवा ही, भगवान की सच्ची सेवा है.

"गरीब लोग महान होते हैं," मदर टेरेसा कहती हैं.

एक बार उन्होंने एक गरीब परिवार को कुछ चावल दिए. उस परिवार की महिला ने आधे चावल अपने पड़ोसी को दे दिए. "वे भी भूखे हैं," उसने कहा.

चाहें वो फ़िलीपीन्स में पोलियो रोगियों से मिल रही हों या फिर जापान में यूनिवर्सिटी के छात्रों से, सभी जगह मदर टेरेसा का बहुत प्रेम से स्वागत होता है.

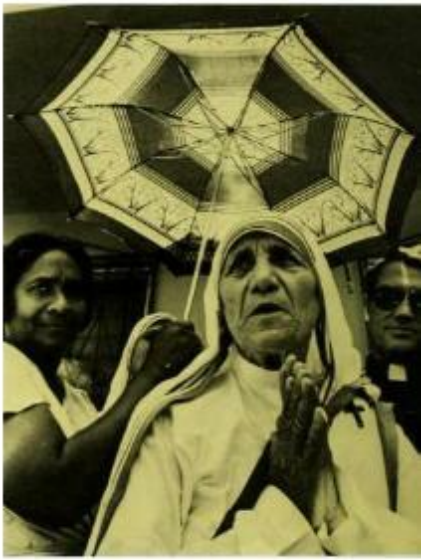

अगर किसी के कलेजे में आग हो, और कुछ अच्छा करने की ललक हो तो वो उसे ज़रूर हासिल कर सकता है. मदर टेरेसा इस बात की जीती-जाती मिसाल हैं.

एक लम्बे अर्से की सेवा में मदर टेरेसा ने हजारों गरीबों की मदद की है. लोग पूछते हैं, “कुछ गरीब लोगों की मदद से भला क्या फायदा होगा? यह तो समुद्र में बूँद जैसा है. अभी भी दुनिया में लाखों-करोड़ों गरीब लोग बचे हैं.”

बहुत साल पहले संत फ्रांसिस डे सलेस ने लिखा था : “पूरे शहर को बदलने के लिए सिर्फ एक कर्मठ महिला की ज़रुरत होती है.”

तब शायद वो मदर टेरेसा के बारे में लिख रहे थे.

मदर टेरेसा

1910	27 अगस्त, शोहपयी यूगोस्लाविया के अल्बेनियन परिवार में जन्म
1931	*सिस्टर ऑफ़ आवर लेडी ऑफ़ लोरेटो* के साथ भारत में काम. उन्होंने नाम बदलकर *टेरेसा* रखा
1931	अंतिम धार्मिक प्रण लिया
1946	गरीबों की सेवा की इच्छा उठी
1948	सिस्टर ऑफ़ लोरेटो छोड़ा. स्वास्थ्य पढ़ा. कलकत्ते की बस्तियों में गईं
1950	*मिशनरीज ऑफ़ चैरिटी आर्डर* को स्वीकृति मिली
1962	भारत सरकार द्वारा *पद्म-श्री* से सम्मानित
1965	*मिशनरीज ऑफ़ चैरिटी* पोप पॉल द्वारा धार्मिक संघठन घोषित
1970	केनेडी फाउंडेशन द्वारा *गुड समैरिटन* पुरुस्कार से सम्मानित
1971	पोप जॉन XXIII शांति पुरस्कार से सम्मानित
1972	अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए *जवाहरलाल नेहरु पुरस्कार* से सम्मानित
1973	लन्दन में *टेम्पलटन पुरस्कार* से सम्मानित
1975	अल्बर्ट स्विएटज़र पुरस्कार से सम्मानित
1979	*बल्ज़न अवार्ड* और शांति के *नोबल पुरस्कार* से सम्मानित